कहानी

समस्या का हल

एक घने जंगल में कई तरह के जानवर रहते थे, जहाँ शेर राजा था और सभी पर नजर रखता था. जंगल के बीचोंबीच एक छोटी सी नदी बहती थी, जो सभी के लिए पानी का सबसे बड़ा स्रोत थी. सुबह-सुबह पक्षियों की चहचहाहट और हिरणों की दौड़ के साथ दिन शुरू होता था. लेकिन एक दिन, जब सूरज की किरणें तेज हो गईं, तो नदी का पानी अचानक सूखने लगा. हिरणों की प्यास बढ़ गई, बंदरों के फल सूखने लगे, और हाथियों को नहाने का मौका भी नहीं मिला. जंगल में अफरा-तफरी मच गई.

शेर ने अपनी गहरी आवाज में सभी जानवरों को बुलाया. दोस्तों, यह गंभीर समस्या है! नदी सूख गई है. हमें मिलकर इसका हल निकालना होगा. कोई विचार है? उसने पूछा, अपनी माने हिलाते हुए. बाघ, जो हमेशा अपनी ताकत पर गर्व करता था, आगे बढ़ा और बोला, राजा, शायद किसी ने नदी को बंद कर दिया है. मैं जाकर देखता हूँ. अगर कोई दुश्मन है, तो मैं उसे सबक सिखा दूँगा! शेर ने हामी भरी, ठीक है, बाघ, जाओ और जल्दी लौटो. बाघ तेजी से नदी की ओर दौड़ा. घंटों बाद वह लौटा, हाँफते हुए बोला, राजा, मैंने नदी का पूरा रास्ता चेक किया. कोई भी पेड़ या जानवर उसे रोक नहीं रहा. फिर भी पानी नहीं है. शायद यह कोई जादू है! शेर ने सोचते हुए कहा, नहीं, जादू नहीं. यह प्रकृति का खेल हो सकता है. हमें और गहराई से सोचना होगा.

इसी बीच, एक चालाक लोमड़ी ने अपनी छोटी-छोटी आँखों से सब कुछ देखा. उसने सोचा, यह कोई साधारण बात नहीं. हमें नदी के स्रोत तक जाना होगा. उसने पास खड़े खरगोश को देखा और कहा, अरे खरगोश भाई, चलो नदी के ऊपर वाले पहाड़ की ओर चलते हैं. शायद वहाँ कुछ पता चले. खरगोश थोड़ा डरा,

लेकिन बोला, ठीक है, लोमड़ी दीदी, पर क्या हम इतनी दूर जा पाएंगे? रास्ता तो खतरनाक है! लोमड़ी ने हिम्मत बँधाई, चिंता मत करो, हम साथ हैं. चलो, शुरू करते हैं.

दोनों ने लंबी यात्रा शुरू की. पहाड़ी रास्ते में कंकड़-पत्थर थे, और बीच-बीच में हवा भी तेज चल रही थी. खरगोश ने कहा, दीदी, थक गया हूँ, क्या फायदा, अगर पानी ही न मिले? लोमड़ी ने उसे हौसला दिया, धैर्य रखो, भाई. अगर हम हार मान लेंगे, तो जंगल कैसे बचेगा? चलो, थोड़ा और प्रयास करें. आखिरकार, वे पहाड़ की चोटी पर पहुँचे. वहाँ उन्होंने देखा कि एक विशाल पत्थर नदी के स्रोत को पूरी तरह से बंद कर रहा था. पानी की एक बूंद भी बाहर नहीं निकल रही थी. खरगोश घबरा गया, अरे! यह तो बहुत बड़ा पत्थर है. हम इसे कैसे हटा पाएंगे? मैं तो छोटा हूँ, मेरी ताकत क्या करेगी? लोमड़ी ने शांति से कहा, डरने की जरूरत नहीं. हम अकेले नहीं हैं. जंगल की पूरी टीम हमारे साथ है. चलो, वापस चलते हैं और शेर राजा को बताते हैं. खरगोश ने राहत की साँस ली, हाँ, दीदी, आप सही कह रही हैं. एकता में ही ताकत है. वे जंगल लौटे और शेर के सामने सारी बात रखी. शेर ने गर्व से दहाड़ा, बहुत अच्छा, लोमड़ी और खरगोश! तुमने सही दिशा दिखाई. अब हम सब मिलकर काम करेंगे. उसने हाथी, भालू और बाघ को बुलाया. हाथी ने पूछा, राजा, हमें क्या करना होगा? शेर ने कहा, हाथी, तुम अपनी सूंड से पत्थर को हिलाओ. भालू, तुम धक्का मारो, और बाघ, तुम अपनी ताकत से उसे तोड़ दो.

सभी जानवर पहाड़ की ओर चल पड़े. रास्ते में भालू ने कहा, यह तो भारी काम है, कहीं हम थक न जाएँ! बाघ ने हँसते हुए जवाब दिया, अरे भाई, थकने की बात मत करो. जंगल की जान बचानी है, तो मेहनत तो करनी पड़ेगी. हाथी ने अपनी सूंड उठाई और बोला, चलो, शुरू करते हैं. मेरी ताकत आज काम आएगी. उसने पत्थर को हिलाया, भालू ने जोर से धक्का मारा, और बाघ ने अपनी पंजों से वार किया. पहली कोशिश में पत्थर हिला, लेकिन पूरी तरह नहीं टूटा.

खरगोश चिंतित होकर बोला, क्या होगा, भाई लोग? यह तो नहीं हिल रहा! लोमड़ी ने उसे दिलासा दिया, रुको, एक और कोशिश करें. हिम्मत मत हारो. शेर ने दहाड़ते हुए कहा, सभी एक साथ मेहनत करो! जंगल हमारा घर है. इस बार सभी ने एक साथ जोर लगाया. हाथी की सूंड, भालू का धक्का, और बाघ की ताकत ने पत्थर को तोड़ दिया. अचानक नदी का पानी फूट पड़ा और जंगल में खुशी की लहर दौड़ गई. सभी जानवर नदी के किनारे इकट्ठा हुए. शेर ने गर्व से कहा, देखो, दोस्तों, एक-दूसरे की मदद से हमने समस्या सुलझाई. लोमड़ी ने मुस्कुराते हुए कहा, हाँ, राजा, अकेले कुछ नहीं हो सकता. टीमवर्क ही असली ताकत है. खरगोश ने जोड़ा, और हिम्मत भी, दीदी! अगर हम डर जाते, तो यह दिन न देखते. हाथी ने हँसते हुए कहा, मेरी सूंड ने तो कमाल कर दिया, है न? बाघ ने ठहाका लगाया, हाँ, भाई, पर बिना मेरी ताकत के क्या होता?

उस दिन से जंगल के जानवरों ने सीख ली कि मुश्किल वक्त में एक साथ आना और सही सोच के साथ कोशिश करना ही समस्या का हल है. उन्होंने फैसला किया कि हर साल इस दिन को एकता दिवस के रूप में मनाएँगे. नदी का पानी फिर से बहने लगा और जंगल में हरा-भरा जीवन लौट आया. शाम को सभी जानवरों ने नदी के किनारे नाच-गाना किया और एक-दूसरे को गले लगाया, वादा करते हुए कि वे हमेशा एकजुट रहेंगे.

बिंदु मिलाओ

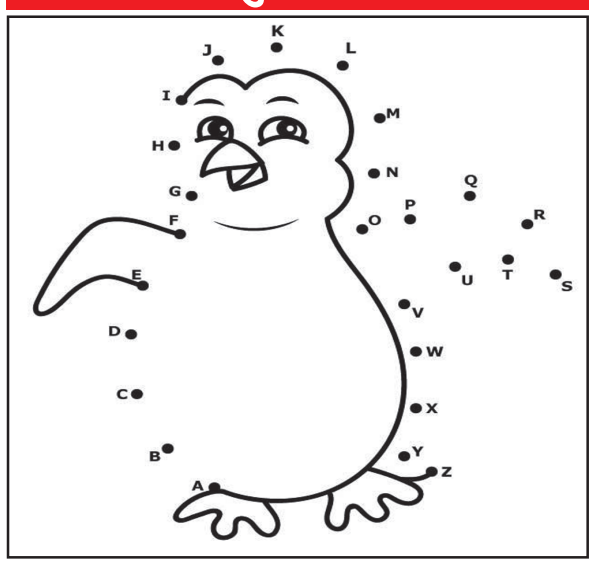

रंग भरो

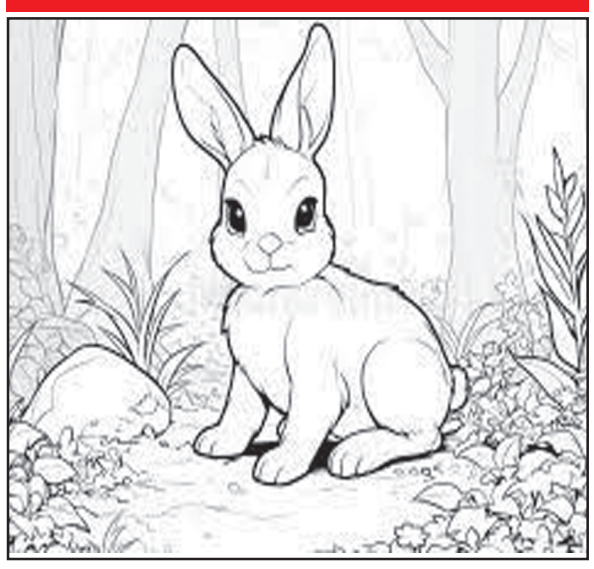

आर्ट एंड क्रॉफ्ट

तीर-कमान : बच्चों के लिए मजेदार क्राफ्ट

रामायण, भारत की महान महाकाव्य कथाओं में से एक, हर भारतीय के दिल के करीब है. इस पवित्र ग्रंथ में भगवान राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जैसे चरित्रों की कहानियाँ हमें साहस, धर्म और बलिदान की सीख देती हैं.

इन कहानियों को नाटकों के माध्यम से जीवंत करने की परंपरा सदियों से चली आ रही है, और इन नाटकों में तीर-कमान का विशेष महत्व है. भगवान राम के हाथों में धनुष-बाण देखकर हर बच्चे का मन रोमांच से भर उठता है. दोस्तों, आप भी अपने घर पर रामायण के इस रोमांच को महसूस कर सकते हैं, क्योंकि आप अपने हाथों से एक सुरक्षित तीर-कमान बना सकते हैं! यह क्राफ्ट न केवल मजेदार है, बल्कि बच्चों की रचनात्मकता को भी बढ़ाएगा. लेकिन याद रखें, इसे सिर्फ खेलने के लिए बनाएँ और किसी को चोट पहुँचाने से बचें—सुरक्षा सबसे पहले!

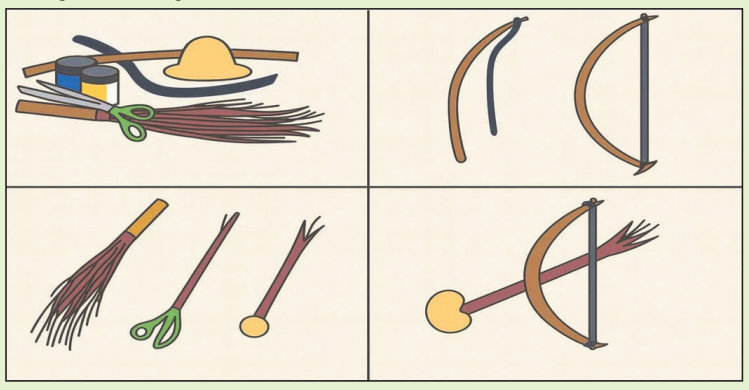

सामग्री- इस क्राफ्ट को बनाने के लिए आपको निम्नलिखित चीजें चाहिए-

इलास्टिक (मजबूत और लचीला, धनुष के लिए), झाड़ू (तीर के लिए डंडी निकालने के लिए), चिकनी मिट्टी (सुरक्षित सिरे के लिए), पेड़ का तना (पतला और लचीला, धनुष बनाने के लिए), कैंची और पेंट (आकार देने और सजाने के लिए), धागा या रस्सी (वैकल्पिक, मजबूती के लिए)

विधि- स्टेप 1 - धनुष तैयार करें- एक पेड़ के पतले तने को चुनें, जो लचीला हो और आसानी से मोड़ा जा सके. इसे धनुष की तरह धीरे-धीरे मोड़ें, लेकिन ध्यान रखें कि यह टूट न जाए. मोड़ने के बाद तने के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मजबूत इलास्टिक बाँध दें. अगर जरूरत हो, तो धागे से इसे और मजबूत कर लें ताकि यह टिकाऊ रहे.

स्टेप 2 - तीर बनाएँ- झाड़ू से एक पतली डंडी निकालें. कैंची की मदद से इसे अपनी पसंद की लंबाई में काट लें. डंडी को चिकना करें ताकि किनारे नुकीले न रहें.

स्टेप 3 - सुरक्षित सिरा जोड़ें- चिकनी मिट्टी से एक छोटी गेंद बनाएँ और इसे तीर के एक सिरे पर अच्छी तरह चिपका दें. यह गेंद तीर को नरम बनाएगी, ताकि खेलते वक्त किसी को चोट न लगे. मिट्टी को सूखने दें.

स्टेप 4 - सजाएँ- अब रंग-बिरंगी पेंट से धनुष और तीर को सजाएँ. आप रामायण के रंगों—हरा, सुनहरा या लाल—का इस्तेमाल कर सकते हैं. स्टिकर या चमकदार चीजें चिपकाकर इसे और आकर्षक बना सकते हैं.

स्टेप 5 - टेस्ट करें- तैयार तीर-कमान को सुरक्षित जगह पर आजमाएँ. इसे किसी नरम चीज (जैसे गद्दा) पर शूट करें और देखें कि यह काम करता है या नहीं.

रोचक तथ्य

सबसे पुराना पिरामिड- मिस्र का पहला पिरामिड साक्कारा में जोसेर का कदम पिरामिड है, जो लगभग 2630 ईसा पूर्व में बनाया गया था.

ग्रेट पिरामिड की ऊंचाई- गीजा का ग्रेट पिरामिड एक समय 146.5 मीटर ऊंचा था, जो आज भी अपनी भव्यता से प्रभावित करता है.

निर्माण का समय- ग्रेट पिरामिड को बनाने में लगभग 20 साल लगे, जो उस समय की मेहनत और तकनीक का प्रतीक है.

पत्थरों की संख्या- इसमें लगभग 2.3 मिलियन पत्थर ब्लॉक इस्तेमाल हुए, जिनका वजन प्रत्येक 2.5 टन तक था.

दक्षिणी गोलार्ध का संकेत- ग्रेट पिरामिड का निर्माण इस तरह हुआ कि यह दक्षिणी गोलार्ध की ओर इशारा करता है, जो खगोलीय ज्ञान को दर्शाता है.

सटीक दिशा- यह पिरामिड चारों दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) में बिल्कुल सटीक रूप से संरेखित है, जो प्राचीन इंजीनियरिंग का चमत्कार है.

शवों का संरक्षण- पिरामिडों में फारो के शवों को ममी बनाकर रखा जाता था, ताकि वे बाद के जीवन में सुरक्षित रहें.

कामगारों की मेहनत- इन पिरामिडों को बनाने वाले लोग गुलाम नहीं, बल्कि प्रशिक्षित मजदूर थे, जो सम्मान के साथ काम करते थे.

आंतरिक जटिलता- ग्रेट पिरामिड के अंदर गुप्त मार्ग और कक्ष हैं, जिनका उद्देश्य आज भी रहस्य बना हुआ है.

तापमान नियंत्रण- पिरामिड के अंदर का तापमान हमेशा 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहता है, चाहे बाहर का मौसम कुछ भी हो.

सबसे बड़ा पिरामिड- खुफु का पिरामिड मिस्र का सबसे बड़ा पिरामिड है, जिसका आधार क्षेत्र 13 एकड़ में फैला है.

सुदान में भी पिरामिड- मिस्र के अलावा सुदान में भी लगभग 220 पिरामिड हैं, जो मिस्र से अधिक संख्या में हैं.

खगोलीय संबंध-कुछ विद्वानों का मानना है कि पिरामिड सितारों के संरेखण के आधार पर बनाए गए थे, जैसे ओरियन बेल्ट.

चोरी का इतिहास- अधिकांश पिरामिड लुटेरों द्वारा खाली कर दिए गए, जिससे उनके खजाने गायब हो गए.

भूल भुलैया

प्रेरक प्रसंग

प्रफुल्ल चंद्र राय : एक महान वैज्ञानिक और देशभक्त का जीवन

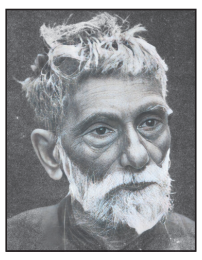

प्रफुल्ल चंद्र राय का जन्म 2 अगस्त 1861 को एक छोटे से गाँव में हुआ, जो आज बांग्लादेश के हिस्से में आता है. उनका परिवार साधारण था, लेकिन शिक्षा और ज्ञान के प्रति उनका लगाव बचपन से ही दिखाई देने लगा. उस समय गाँवों में स्कूलों के आसपास बड़े-बड़े पार्क की जगह घने पेड़-पौधे हुआ करते थे. प्रफुल्ल चंद्र को पढ़ाई से थोड़ा समय मिलने पर वे इन पेड़ों की ऊँची शाखाओं पर चढ़ जाया करते थे. वे वहाँ आराम करते और पत्तों के झुरमुट में छिपकर

अपने दोस्तों को डराया करते थे. यह शरारत उनके बचपन का एक मज़ेदार हिस्सा थी, जो उनकी जिज्ञासु और साहसी प्रकृति को दर्शाती थी.

शिक्षा और रुचियाँ- प्रफुल्ल चंद्र बचपन से ही सभी विषयों में होशियार थे. उन्हें विज्ञान के साथ-साथ साहित्य का भी गहरा शौक था. वे किताबें पढ़ने और नई-नई चीजें सीखने में रुचि रखते थे. लेकिन उनके जीवन का एक बड़ा मोड़ तब आया जब वे कोलकाता के प्रतिष्ठित प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला लेने गए. वहाँ केमिस्ट्री के प्रोफेसर अलेक्जेंडर पीडर के लेक्चर ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला. प्रोफेसर की शिक्षण शैली और केमिस्ट्री के प्रति उनका जुनून प्रफुल्ल चंद्र को इतना आकर्षित किया कि उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया—केमिस्ट्री में महारथ हासिल करना. यह निर्णय उनके करियर की नींव रखने वाला साबित हुआ.

प्रफुल्ल चंद्र ने अपनी उच्च शिक्षा के लिए विदेश का रुख किया और वहाँ से केमिस्ट्री में गहन अध्ययन किया. जब वे पढ़ाई पूरी करके 1888 में भारत लौटे, तो उनके सामने देश की दयनीय स्थिति थी. गरीबी, अशिक्षा और औद्योगिक पिछड़ापन उन्हें विचलित कर गया. उन्होंने सोचा कि अगर भारत को समृद्ध बनाना है, तो यहाँ उद्योगों की स्थापना जरूरी है. लेकिन उनके पास न तो पर्याप्त धन था और न ही संसाधन. फिर भी, उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति ने उन्हें पीछे हटने नहीं दिया.

प्रफुल्ल चंद्र ने अपने बलबूते पर एक छोटी सी केमिकल फैक्ट्री शुरू करने का फैसला किया. उनके पास सीमित साधन थे, लेकिन उनका जुनून और मेहनत ने इस सपने को साकार किया.

कविता

सब्ज़ीवाला आया है!

सब्ज़ीवाला आया है,
आलू, गोभी लाया है.

गाजर और चुकंदर हैं,
इक डलिया के अंदर हैं.

नींबू पीला-पीला है,
खट्टा और रसीला है.

मूली चाँदी जैसी है,
बिलकुल उजली-उजली है.

शलगम, पालक और
गाजर,
खुश होते हैं हम खाकर.

सब्ज़ी रोज़ बनाकर खाएँ,
बीमारी को दूर भगाएँ.

बूझो तो जानें

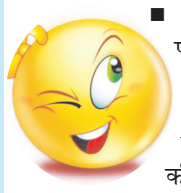

- वह क्या है जिसकी गर्दन है पर सिर नहीं?
  जवाब- बोतल
- काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा तो दूसरे की बारी.
  जवाब- तवा और रोटी
- बूझो भैया एक पहेली, जब काटो तो नई नवेली.
  जवाब- पेंसिल
- एक लड़की 40 फीट ऊंची सीढ़ी से गिर गई, फिर भी उसे चोट नहीं लगी, कैसे?
  जवाब- क्योंकि वह सबसे निचले पायदान से गिरी थी.
- वह क्या है जो तुम्हारा है पर उसे तुमसे ज्यादा दूसरे लोग इस्तेमाल करते हैं?
  जवाब- तुम्हारा नाम
- क्या है जो हमेशा बढ़ती रहती है और कभी कम नहीं होती?
  जवाब- उम्र

हंसी-ठिठोली

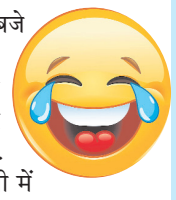

- चीकू-तुम रात में कितने बजे सोते हो?
  मीकु- अगर किताब उठा लूँ तो 9 बजे और अगर मोबाइल उठा लूं तो 2 बजे.
- टीचर- वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो, वसंत ने मुझे मुक्का मारा.
  चिंटू-वसन्तपंचमी
- सोनू- हम लद्दाख घूमने गए थे, वहाँ जून में भी लोग गर्म पानी से नहाते हैं.
  नटखट नीटू- इसमें कौन सी बड़ी बात है, हम दिल्ली में भी जून में गर्म पानी से नहाते हैं.
  सोनू-वो कैसे?
  नटखट नीट-दिल्ली में जून की गर्मी में टंकी का पानी इतना गर्म हो जाता है कि नल से सिर्फ गर्म पानी ही आता है.
- इलेक्ट्रिशियन- यह रेडियो ठीक है, बस मौसम खराब होने की वजह से काम नहीं कर पा रहा है.
  यामुंडा- लो 100 रुपये, और इसमें नया मौसम डाल दो!

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर- 1. बादलों की संख्या, 2. भेड़िए की पूंछ, 3. बड़े पेड़ के तने का होल, 4. नीचे लगे छोटे पेड़ों की संख्या में अंतर, 5. नीचे रखा हुआ फूल, 6. दो पेड़ों के बीच में लगा एक पेड़, 7. भेड़िए की मुंह की हंसी